

## RBI द्वारा स्वर्ण का प्रत्यावर्तन

### प्रलिस के लयि:

[भारतीय रज़िर्व बैंक](#), [बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स](#), [वदिशी मुद्रा भंडार](#), [सॉवरेन गोलड बॉण्ड](#), [आयात कवर](#), [बाहय ऋण](#), [वरलड गोलड काउंसलि](#), [ट्रेजरी बलि](#), [सरकारी प्रतभितयिाँ](#), [वदिशी मुद्रा परसिपत्तयिाँ](#), [आरकषति स्वर्ण नधि](#), [वशिष आहरण अधकिार](#), [रज़िर्व ट्रेनच सथति](#)

### मेन्स के लयि:

अरथव्यवस्था में स्वर्ण और वदिशी मुद्रा भंडार की भूमकि।

[स्रोत: बीएस](#)

## चर्चा में क्योँ?

हाल ही में [भारतीय रज़िर्व बैंक \(RBI\)](#) ने [बैंक ऑफ इंग्लैंड \(BoE\)](#) और [बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स \(BIS\)](#) से 102 टन स्वर्ण का प्रत्यावर्तन (वापस लाना) कयि।

- **RBI** की "वदिशी मुद्रा भंडार प्रबंधन पर अर्धवार्षकि रिपोर्ट" के अनुसार, सतिंबर 2024 में घरेलू स्तर पर रखे गए स्वर्ण की मात्रा 510.46 मीटरकि टन है।
- भारतीय रज़िर्व बैंक के पास भारत की कुल आरकषति स्वर्ण नधि 854.73 मीटरकि टन है।

### नोट:

- [वरलड गोलड काउंसलि](#) (जून 2024) के अनुसार भारत [सॉवरेन गोलड होल्डगिंस](#) के मामले में 8वें स्थान पर है, जबकि अमेरिका इस सूची में शीर्ष पर है।
- भारत की गोलड होल्डगिंस 840.76 मीटरकि टन है, जो इसके वदिशी मुद्रा भंडार का 9.57% है।
- गोलड होल्डगिंस के मामले में भारत से आगे अन्य देश [जर्मनी](#), [इटली](#), [फ्राँस](#), [रूस](#), [चीन](#) और [जापान](#) हैं।

## भारत स्वर्ण का प्रत्यावर्तन क्योँ कर रहा है?

- **भू-राजनीतिक जोखमि को कम करना:** भारत अपने आरकषति स्वर्ण नधि को घरेलू स्तर पर बनाए रखना चाहता है, ताकि उसे संभावतिवदिशी प्रतबंधों से बचाया जा सके, जो वदिशों में रखी परसिपत्तयिाँ तक पहुँच को प्रतबंधित कर सकते हैं।
  - [यूकरेन संघर्ष](#) के दौरान [अमेरिका](#) और [सहयोगयिाँ](#) द्वारा लगाए गए प्रतबंधों के कारण रूस की 300 बलियिन अमेरिकी डॉलर के स्वर्ण तथा [वदिशी मुद्रा भंडार](#) तक पहुँच अवरुद्ध हो गई है।
- **बाज़ार में वशिवास में वृद्धि:** स्वर्ण को वशिष रूप से उभरते बाज़ारों में एक "सुरकषति आश्रय" परसिपत्तकि रूप में देखा जाता है और इसे राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर रखने से वतितीय प्रणाली में जनता का वशिवास बढ़ जाता है।
- **आर्थकि संप्रभुता:** भारत की आरकषति स्वर्ण नधि अब भारत के [वदिशी ऋण](#) के 101% से अधिक है, जो भारत की ऋण चुकौती कषमता में वृद्धि करती है।
- **घरेलू वतितीय बाज़ारों को समर्थन:** भारत में स्वर्ण की भौतिक उपस्थति के कारण RBI के पास घरेलू बाज़ारों में स्वर्ण-समर्थति वतितीय उत्पादों को समर्थन देने के लयि अधिक लचीलापन है।
  - भारत सरकार ने **भौतिक स्वर्ण के आयात** पर नरिभरता कम करने के लयि [सॉवरेन गोलड बॉण्ड \(SGB\)](#) जैसी पहल को बढ़ावा दयि है।
- **स्वर्ण प्रत्यावर्तन की वैश्वकि प्रवृत्तति:** पछिले दशक में केंद्रीय बैंकों द्वारा स्वर्ण प्रत्यावर्तन की व्यापक प्रवृत्तति देखी गई है।
  - उदाहरण के लयि [वेनेज़ुएला](#) ने वर्ष 2011 में [अमेरिका](#) और [यूरोपीय भंडारों](#) से तथा [ऑस्टरयिा](#) ने वर्ष 2015 में स्वर्ण का प्रत्यावर्तन

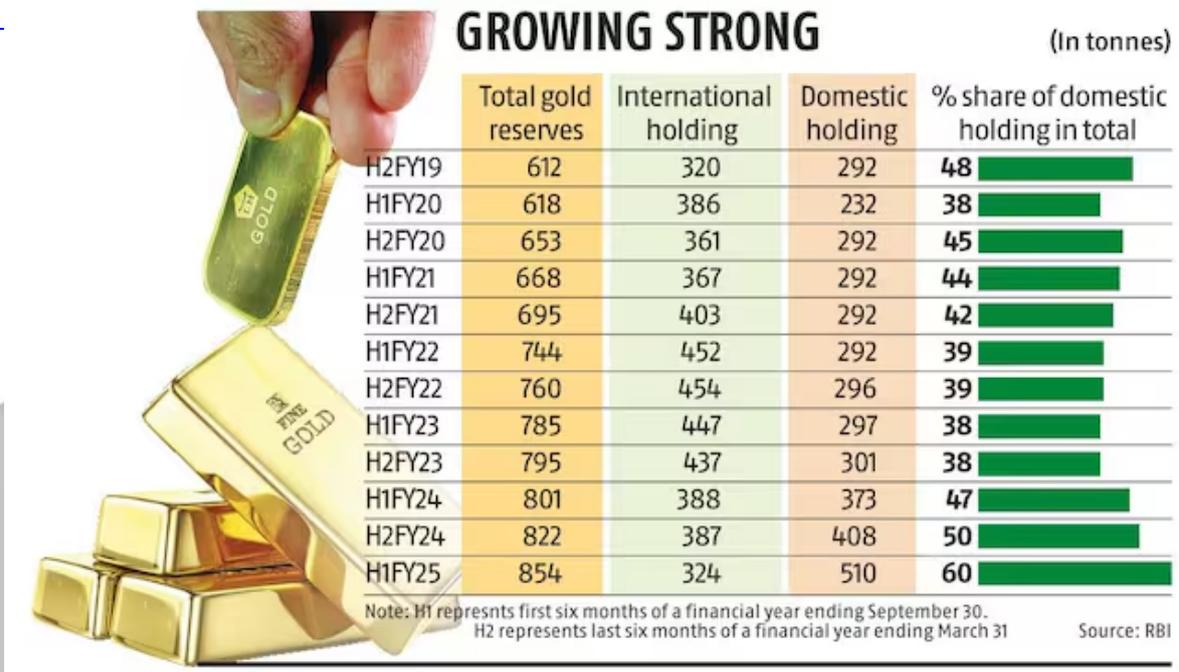
किया।

- **लागत बचत:** RBI सामान्यतः बैंक ऑफ इंग्लैंड या फेडरल रज़िर्व जैसी संस्थाओं को उनके स्वर्ण को रखने के लिये बीमा, परविहन शुल्क, संरक्षक शुल्क और वॉल्ट शुल्क का भुगतान करता है।
  - इस स्वर्ण में से कुछ का प्रत्यावर्तन करके RBI इन आवर्ती लागतों को कम कर सकता है।
- **आयात कवर में वृद्धि:** **आयात कवर** एक महत्वपूर्ण व्यापार संकेतक है, जो वदिशी मुद्रा भंडार की पर्याप्तता को दर्शाता है और वदिशी मुद्रा भंडार में वृद्धि के साथ मज़बूत हुआ है।
  - वर्तमान वदिशी भंडार **11.8 महीने के आयात को कवर करने के लिये पर्याप्त** है।

## भारत का वदिशी मुद्रा भंडार

- वदिशी मुद्रा भंडार एक केंद्रीय बैंक द्वारा वदिशी मुद्राओं में आरक्षण रखी गई परसिंपत्तियाँ हैं, जिनमें बॉण्ड, **ट्रेजरी बलि** और अन्य **सरकारी परसिंपत्तियाँ** शामिल हो सकती हैं।
- भारत के वदिशी मुद्रा भंडार में **वदिशी मुद्रा परसिंपत्तियाँ**, **आरक्षणित स्वर्ण नधि**, **वशिष आहरण अधिकार** और अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के साथ **रज़िर्व ट्रेन्च स्थिति** शामिल हैं।
- **अक्टूबर, 2024** में भारत के वदिशी मुद्रा भंडार की स्थिति **688.27 बलियन अमेरिकी डॉलर** होने का अनुमान लगाया गया है।
- इसमें शामिल है:
  - **598.24 बलियन अमेरिकी डॉलर** की वदिशी मुद्रा परसिंपत्तियाँ (FCA)
  - **67.44 बलियन अमेरिकी डॉलर** का स्वर्ण
  - **18.27 बलियन अमेरिकी डॉलर** के वशिष आहरण अधिकार (SDR)
  - **4.32 बलियन अमेरिकी डॉलर** की रज़िर्व ट्रेन्च स्थिति (RTP)।

//



## वदिशी मुद्रा दर प्रबंधन की पृष्ठभूमि

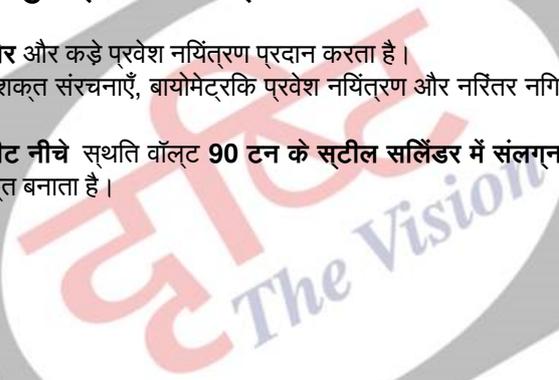
- **स्वर्ण मानक (1870-1914):** मुद्राएँ सीधे स्वर्ण के मूल्य से जुड़ी हुई थीं। प्रत्येक देश अपनी मुद्रा को सहारा देने के लिये आरक्षणित स्वर्ण नधि रखता था। स्थिर वनिमिय दरों ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार को आसान और पूर्वानुमानित बना दिया।
- **ब्रेटन वुड्स प्रणाली (1944-1971):** इसकी स्थापना **द्वितीय विश्व युद्ध** के बाद की गई थी और इसकी प्रमुख वशिषताएँ थीं:
  - आरक्षणित मुद्रा के रूप में अमेरिकी डॉलर के साथ **नयित वनिमिय दरें**।
  - अन्य मुद्राएँ **नयित दर पर डॉलर से जुड़ी हुई थीं**।
  - इसके बदले में अमेरिकी डॉलर 35 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस की नश्चित कीमत पर स्वर्ण में परिवर्तित हो सकता था।
- **वर्तमान परिदृश्य (वभिन्न व्यवस्थाएँ - वर्ष 1971 के बाद):** **आपूर्ति और मांग** की बाज़ार शक्तियाँ वभिन्न व्यवस्थाओं के साथ वनिमिय दरों को निर्धारित करती हैं।
  - **अस्थायी वनिमिय दर:** किसी मुद्रा का मूल्य वदिशी मुद्रा बाज़ार में आपूर्ति और मांग द्वारा निर्धारित होता है। **वनिमिय दरें** नरितर उतार-चढ़ाव करती रहती हैं एवं आधिकारिक तौर पर किसी अन्य मुद्रा या वस्तु से अधिकिलति या तय नहीं होती हैं।
  - **अधिकिलति दरें:** कोई देश अपनी मुद्रा को किसी एक मज़बूत मुद्रा (जैसे, USD) या वविधि मुद्रा समूह से जोड़ता है।
  - **डॉलरीकरण:** कुछ देश अपनी मुद्रा को पूरी तरह से त्याग देते हैं और अमेरिकी डॉलर को अपना लेते हैं (जैसे, इक्वाडोर)।

## RBI वदिशों में आरक्षति स्वरण नधिका संचय क्यो करता है?

- भू-राजनीतिक जोखिमों को कम करना: कई अंतरराष्ट्रीय स्थानों पर स्वरण रखने से RBI भारत में अपने भंडार के केंद्रति होने केजोखमि को कम करता है।
  - लंदन और न्यूयॉर्क जैसे प्रमुख वैश्विक वित्तीय केंद्रों में भंडार जमा करने से यह सुनिश्चित होता है कि किसी भी घरेलू या क्षेत्रीय व्यवधान की स्थिति में परसिपत्तियाँ सुलभ तथा सुरक्षति रहे।
- अंतरराष्ट्रीय चलनधि: लंदन, न्यूयॉर्क और ज्यूरिख जैसे वित्तीय केंद्रों में रखा गया स्वरण RBI को वैश्विक बाजारों तक तत्काल पहुँच प्रदान करता है।
  - ये शहर स्वरण व्यापार के लिये प्राथमिक केंद्र हैं, जिससे आवश्यकता पड़ने पर स्वरण को तुरंत नकदी में बदलना आसान हो जाता है।
- आर्थिक लचीलापन: अंतरराष्ट्रीय बाजारों में आरक्षति स्वरण नधिका उपलब्धता भारत को ऋण या अन्य वित्तीय साधनों के लिये संपारश्विक के रूप में उपयोग करने की अनुमति देती है, जिससे आर्थिक लचीलापन को समर्थन मिलता है तथा अंतरराष्ट्रीय वित्तीय दायित्वों को पूरा करने की भारत की क्षमता बढ़ती है।
- विश्वसनीय अभरिक्षक: बैंक ऑफ इंग्लैंड को एक विश्वसनीय अभरिक्षक माना जाता है, जो राष्ट्रीय परसिपत्तियों की सुरक्षा के लिये जाना जाता है।
  - अंतरराष्ट्रीय नपिटान बैंक (BIS) केंद्रीय बैंकों को अपनी आरक्षति स्वरण नधिका प्रबंधन और भंडारण करने के लिये एक स्थापति अंतरराष्ट्रीय ढाँचा प्रदान करता है।

## प्रमुख अंतरराष्ट्रीय स्वरण तजोरयिों/गोल्ड वॉल्ट में सुरक्षा उपाय क्या हैं?

- बैंक ऑफ इंग्लैंड, UK: यह उन्नत नगिरानी प्रणाली, स्थायी वॉल्ट डोर और कड़े प्रवेश नियंत्रण प्रदान करता है।
- BIS, स्वटिज़रलैंड: वॉल्ट में अत्याधुनिक सुरक्षा उपाय हैं, जिसमें सशक्त संरचनाएँ, बायोमेट्रिक प्रवेश नियंत्रण और नरितर नगिरानी शामिल है।
- फेडरल रज़िर्व बैंक ऑफ न्यूयॉर्क, USA: सड़क के स्तर से 80 फीट नीचे स्थिति वॉल्ट 90 टन के स्टील सल्लिंडर में संलग्न है, जो इसे असाधारण रूप से सुरक्षति और संभावति सुरक्षा उल्लंघनों के प्रति सशक्त बनाता है।



# रुपए का अंतर्राष्ट्रीयकरण

## अर्थ

- सीमा पार हस्तांतरण में भारतीय रुपए के उपयोग में वृद्धि करना

## इसमें शामिल है

- आयात और निर्यात के लिये रुपए का उपयोग
- चालू और पूंजी खाता हस्तांतरण के लिये रुपए का उपयोग

भारतीय रुपया चालू खाते में पूरी तरह से लेकिन पूंजी खाते में आंशिक रूप से परिवर्तनीय है।

## आवश्यकता

- अमेरिका द्वारा अमेरिकी डॉलर का हथियारीकरण (प्रतिबंधों के लिये)
- डी-डॉलराइजेशन की लहर
- चीनी मुद्रा रॉमिन्बी का बढ़ता अंतर्राष्ट्रीयकरण
- वैश्विक विदेशी मुद्रा बाजार कारोबार में भारत की न्यूनतम हिस्सेदारी (1.7%)

## RBI के प्रयास

- सीमा-पार व्यापार में भारतीय मुद्रा - विदेश व्यापार नीति 2023 में प्रमुख घटक
- 18 देशों के साथ रुपए में व्यापार समझौते हेतु तंत्र प्रस्तुत किया गया
  - इन देशों के बैंकों को विशेष सोव्ही रुपया खाते (SVRAs) खोलने की अनुमति दी गई
- "भारतीय रुपए में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौता" पर परिपत्र (2022)
- भारतीय रुपए में बाह्य वाणिज्यिक उधार को सक्षम बनाया गया

## महत्त्व

- अमेरिकी डॉलर पर कम निर्भरता
- विदेशी मुद्रा भंडार रखने की कम आवश्यकता
- भारतीय व्यापार की बेहतर सौदा निपटान शक्ति
- मुद्रा की अस्थिरता का कम जोखिम

## चुनौतियाँ

- रुपया का पूरी तरह से परिवर्तनीय न होना
- अन्य देशों को भारतीय रुपया (INR) रखने की कम आवश्यकता; वैश्विक निर्यात में भारत की कम हिस्सेदारी
- बाह्य आघातों के प्रति रुपया और अधिक संवेदनशील हो सकता है
- रुपए की आपूर्ति पर भारत का कम नियंत्रण

## उठाए जा सकने योग्य कदम

- INR में अधिक उदारीकृत निपटान (भारत और विदेशों में)
- भारत को वैश्विक वित्तीय बाजार में अपनी पहुंच का विस्तार करना चाहिये
- व्यापार घाटे को कम करने के लिये निर्यात-उन्मुख अर्थव्यवस्था में परिवर्तित होना



## नबिर्कष

भारत द्वारा सोना वापस लाने का नरिणय आरथकि लचीलेपन और जोखमि न्यूनीकरण की दशि में बदलाव को दर्शाता है। घरेलू स्तर पर अधिक सोना रखने से भारत भू-राजनीतिक और कस्टोडियल जोखमिों को कम करता है, बाजार में विश्वास बढ़ाता है तथा वित्तीय उत्पादों का समर्थन करता है, साथ ही केंद्रीय बैंकों द्वारा स्वर्ण भंडार पर राष्ट्रीय नरिंतरण को मजबूत करने की वैश्विक प्रवृत्तिके साथ तालमेल बढाता है।

???????? ???? ???? ????:

प्रश्न: वदिशों में भारत का आरकषति स्वर्ण नधि ररिखना उसकी अंतर्राष्ट्रीय तरलता और आरथकि लचीलेपन में कसि प्रकार योगदान देता है?

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

????????

प्रश्न: सरकार की 'संपरभु स्वर्ण बॉन्ड योजना (Sovereign Gold Bond Scheme)' और 'स्वर्ण मुद्रीकरण योजना (Gold Monetization Scheme)' का/के उद्देश्य क्या है/हैं? (2016)

1. भारतीय गृहस्थों के पास नष्टिकरयि पड़े स्वरण को अर्थव्यवस्था में लाना ।
2. स्वरण एवं आभूषण के क्षेत्र में एफ.डी.आई. (FDI) को प्रोत्साहति करना ।
3. स्वरण-आयात पर भारत की नरिभरता में कमी लाना ।

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग करके सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (c)

प्रश्न: भारत की वदिशी मुद्रा आरक्षति नधि में नमिनलखिति में से कौन-सा एक मदसमूह सम्मलिति है? (2013)

- (a) वदिशी मुद्रा परसिपत्त, वशिष आहरण अधकिार (एस.डी.आर.) तथा वदिशों से ऋण
- (b) वदिशी मुद्रा परसिपत्त, भारतीय रज़िर्व बैंक और द्वारा धारति स्वरण तथा वशिष आहरण अधकिार (एस. डी. आर.)
- (c) वदिशी मुद्रा परसिपत्त, वशिष बैंक से ऋण तथा वशिष आहरण अधकिार (एस. डी. आर.)
- (d) वदिशी मुद्रा परसिपत्त, भारतीय रज़िर्व बैंक द्वारा धारति स्वरण तथा वशिष बैंक से ऋण

उत्तर: (b)

??????

प्रश्न: सोने के लयि भारतीयों के उन्माद ने हाल के वर्षों में सोने के आयात में प्रोत्कर्ष (उछाल) उत्पन्न कर दयि है और भुगतान-संतुलन और रुपए के बाह्य मूल्य पर दबाव डाला है। इसको देखते हुए, स्वरण मुद्रीकरण योजना के गुणों का परीक्षण कीजयि। (2015)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/rbi-s-repatriation-of-gold-1>

